मासिक

मानव मन्दिर

संरक्षक :

परम दयाल पण्डित फकीर चन्द जी महाराज

सम्पादक

सेठ दुर्गादास जी

वर्ष १	फरवरी, १९७५	संख्या ११

सम्पादकीय

क्या कोई महापुरुष किसी के पाप ले सकता है ?

सुनने में आया है कि गुरु अपने चेलों के पाप स्वयं आप ले लेता है। प्रश्न पैदा होता है कि वह क्यों दूसरों के पाप अपने ऊपर ले लेता है ? ऐसा करने की क्या आवश्यकता हुई। क्या यह शुभ कार्य है ? क्या यह ठीक है कि दूसरों के पाप अपने ऊपर लिए जा सकते हैं। क्या ऐसा होना सम्भव है ? कर्म की फिलोस्फी इस विषय में क्या ख्याल करती है ? इन प्रश्नों का उत्तर अक्ल की कसौटी पर जांचना चाहिए। मैं समझता हूं कि यह एक भ्रम है, धोखा है। ऐसा विचार और भाव किसी जीव के हृदय में समाना नहीं चाहिए। क्योंकि इसमें जीव का कल्याण नहीं है बल्कि जीव का उल्टा अधिक नुकसान है। यथार्थ बात यही है।

जब पाकिस्तान बना उस समय कोई महापुरुष बीमार थे। किसी ने यह प्रसिद्ध कर दिया कि

पाकिस्तान से जो इनके चेले हिन्दोस्तान में आए हैं, उन सबके पाप अपने ऊपर लेने की वजह से गुरु महाराज बीमार हो गए हैं। यह बात कुछ बनी नहीं, जची नहीं, माकूल नहीं। प्रमाण की इसमें कमी है। इसके अतिरिक्त इसमें कहां तक सत्यता है। इस सच्चाई को पाप लेने वाले या पाप देने वाले जानते होंगे वरन् इस बात को बुद्धि मानने से इन्कार करती है।

महापुरुष तो संसार के बन्धनों से आजाद होते हैं। मोह में नहीं फंसते। वे सदैव बन्धन से निर्बन्ध रहते हैं। ऐसे अनुभवी और परमार्थी महापुरुष पर संसारी जीवों के दुःखों का क्या प्रभाव हो सकता है। भला वह संसार के जीवों का कष्ट अपने ऊपर क्यों लेवें जब कि किसी से इनका कोई सम्बन्ध नहीं है, कोई रिश्ता नहीं है। वह तो पूर्ण पुरुष है। अडोल हस्ती जीवन मुक्त दशा की रहनी है।

दूसरा प्रश्न है,कतल तो करता है बेटा परन्तु फांसी की सजा मिले बाप को। यह कहां तक सम्भव है। यह इन्साफ नहीं मानता। न ही कानून में ऐसा

दर्ज है न ही 'कानून कुदरत' इस बात की इजाजत देती है। सत्य तो यह है जैसा कि स्वामी जी महाराज फरमाते हैं :---

"कर्म जो जो करेगा तू, अन्त में भोगना पड़ेगा।"

मतलब साफ है। मनुष्य जो अच्छा या बुरा कर्म करता है उस अच्छे या बुरे कर्म का फल उसी इन्सान को भोगना पड़ेगा जिसने वह कर्म किया है। भला किसी दूसरे मनुष्य को इसके कर्म से क्या सम्बन्ध हो सकता है। बिल्कुल कोई नहीं। दूसरे ऐसा होना किसी की समझ में नहीं आता। क्या दूसरों के पाप कोई ले सकता है ? एक व्यक्ति रत्न चन्द का झगड़ा किसी से हो गया, बात बढ़ गई। हाथापाई तक नौबत आ गई। छुरे चले गए। रत्नचन्द के भाई दौलत राम को पता चला वह अपने भाई की मदद के लिए दौड़ा २ आया। झगड़ा बढ़ गया। दौलत राम मारा गया। अब रत्न चन्द और उसके सब रिश्तेदार और शहर वाले कहते हैं कि दौलत राम

ने अपने भाई की खातिर जान दे दी। यह बात तो बिलकुल ठीक है। लेकिन अगर यह कहा जाए कि दौलत राम ने अपने भाई रत्नचन्द के बुरे कर्मों का फल ले लिया, यह बात कहां तक ठीक है। अगर रत्नचन्द लड़ाई में कतल हो जाता, और कोई कह देता कि रत्नचन्द ने सारे शहर के निवासियों के पाप लिए थे। बीसवीं शताब्दी के लोग यह बात मानने को तैयार नहीं हैं। यह बात अक्ल नहीं मानती। दलील से खाली है। व्यर्थ है। इसका किसी धर्म से क्या सम्बन्ध हो सकता है? कोई नहीं।

फौज देश की रक्षा करती है। अगर फौज लड़ाई में मारी जाए तो यह बात ठीक होगी कि फौज ने देश के लिए कुर्बानी दी परन्तु अगर यह कहा जाए कि फौज ने देश के पाप ले लिए तो आप स्वयं विचार करें कि इसमें सत्यता कहां तक है।

यह बात मानने के योग्य नहीं है, कि कोई गुरु अपने चेलों के पाप ले लेता है यह बात बिलकुल

गलत है। मानने योग्य नहीं है। चेलो ने तो उनकी शरण ली है। इस बात का सम्बन्ध किसी पन्थ से नहीं होना चाहिए। क्योंकि उस असूल से मुक्ति पाने की युक्ति में कोई वृद्धि नहीं होती। बल्कि यह बात जीवों को गुमराह कर देती है। जब मनुष्य को यकीन हो जाए कि किसी महापुरुष की शरण लेने से इसके पाप क्षमा हो जाएंगे वह पाप करने से कभी भय नहीं खाएगा और न ही कभी हिच-कचाएगा। जब बुरे कर्म करने की सजा का डर ही न रहा तो फिर व्यक्ति पाप क्यों नहीं करेगा। इसलिए जो पन्थ या गुरु इस बात का प्रचार करते हैं वे महापाप कर रहे हैं। लोगों को पाप करने की प्रेरणा दे रहे हैं।

हां बुरे कर्मों का फल नष्ट हो सकता है। ऐसा उपनिषद् और गीता कहती है। श्वेताश्वतरोपनिषद् में बर्णन किया गया है ब्रह्म परव्योम को जान लेने से सारे पिछले कर्म नष्ट हो जाते हैं। एक ईश्वर त्रिलोकी (प्रकृति लोक, जीव लोक और ईश्वर लोक) में रहता है। यह सबल ब्रह्म है। दूसरा ईश्वर त्रिलोकी का सहारा है। चौथे लोक का ईश्वर शुद्ध

ब्रह्म है। चौथे लोक को स्वीतर लोक या सावित्री लोक कहते हैं। इसलिए आगे ब्रह्म परव्योम है। ब्रह्म परव्योम के साक्षात्कार करने से और इसमें ठहरने से सब पिछले कर्म अच्छे या बुरे नाश हो जाते हैं। और पारब्रह्म को पा लेने से जीव आवागमन से मुक्ति पा जाता है। भगवान कृष्ण गीता में कहते हैं कि अगर :---

योग में तुमको हो 'इनहमाक'[1] तो कर्मों के बन्धन से जाए पाक। (श्लोक ३२ अध्याय २)

फिर फरमाते हैं :---

न जीने की शादी न हारे का सोग, कि दिल के तवाजन का है नाम योग। (श्लोक ३९ अध्याय २)

योग किसे कहते है ? सुनिए योग की तारीफ :--

भगवान् श्री कृष्ण जी महाराज फरमाते हैं कि :---

जो सुख से सुखी हो, न दुःख से दुःखी
न खौफ उसको खाए न गुस्सा कभी।
न जज़बों के जंजाल में आए वह
मुनि कायम उलअकल कहलाए वह।

---

१. समाधि की हालत

बुराई जो पहुंचे तो नालां न हो
भलाई जो पाए शादां न हो।

किसी से तअल्लुक न उसका लगाव
यही कायम उल अकल का है स्वभाव।
इसे तर्क की लज्ज़त की लज्ज़त मिले
जैसे दीदबारी[1] को दौलत मिले।

(श्लोक ५६, ५७ अध्याय २)

आगे फरमाते हैं योग से क्या हासिल होगा।

जो यज्ञ की खातिर करे हर अमल
तो कर्म उसके जाते हैं सारे पिघल।

(श्लोक २३ अध्याय ४)

जो फासक है तो या गुनाहगार है
गुनाहगार वन्दों का सरदार है।
तो फिर ज्ञान नैया पर हो जा सवार
गुनाहों के सागर से कर देगी पार।

(श्लोक ३६ अध्याय ४)

फकत मेरी खातिर तू हर काम कर
हवन दान दे सब मेरे नाम पर।
तेरा खाना पीना हो मेरे लिए
तेरा तप ते जीना हो मेरे लिए।
कटेंगे यह कर्मों के बन्धन तमाम

---

१. मालिके कुल के दर्शन

न होगा बुरे या भले फल से काम।
(श्लोक २७, २८ अध्याय ९)

फिर फरमाते हैं :

तू सब धर्म छोड़ कर ले मेरी राह
तू मांग आके दामन में मेरे पनाह।
तेरे पाप सब दूर कर दूंगा मैं
न ग़मगीन हो मसरूर कर दूंगा मैं।
(श्लोक ६६ अध्याय १८)

स्वामी जी महाराज फरमाते हैं :

सूरत ई अतिकर मगनानी, पुरुष अनामी जाए समानी।

सुरत अपने आप में मगन हुई, बुरे कर्म और पुन पाप सब समाप्त हो गए। जब तक जीव मन में है तब तक पाप पुण्य का ख्याल है। जब जीव मन से ऊपर चला गया। मन को छोड़ने लग गया। सुरत सुरत में ठहरने लगी, तो पाप पुण्य सब नाश हो जाते हैं। इसलिए स्वामी जी महाराज फरमाते हैं :

पाप पुन्य दोऊ भई कहावत।

पापी मन समाधिचित (एकाग्र) नहीं हो सकता। समाधि में लय नहीं हो सकता। सुरत

अडोल है। कैसा पाप, कैसा पुण्य । वह तो शरणागत हो चुका है। इसके सब कार्य मालिक के अधीन हैं। वह कर्ता नहीं, अकर्मक है। सतलोक के अभ्यासी को स्त्री पुरुष का अन्तर समाप्त हो जाता है। बुरे कर्मों का फल नष्ट हो जाता है इसलिए "पाप पुन्य दोऊ भई कहावत।" किसी मुसलमान सूफी फकीर ने कैसे सुन्दर शब्दों में वर्णन किया है :

बाज आ बाज आ—हर आंचे हस्ती वाज आ।
गर काफिर गिवरों—बुत परसती बाज आ।
ईन दरगाहे मा दरगाह न उमीदी नेसत
बसद बार तोबा सकती बाज़ आ।

ईश्वर इन्सान को खताव (सामने) करके कहता है। कि तू तोबा कर। अगर तू मेरी हस्ती को मानने से इन्कार कर रहा है, तो भी तोबा कर। फिर तोबा कर। मेरे दरवार में नाउमीदी नहीं है। अगर तू हजार गुनाह कर चुका है, प्रवाह न कर तोबा करले। मैं तुमको क्षमा कर दूंगा। कबीर साहिब फरमाते हैं :

नाम जो रत्ती एक है, पाप जो रत्ती हज़ार।
आध रत्ती घट संचिरे, जार करे सब झार।

जब घट में नाम की गून्ज आएगी, कबीर साहिब फरमाते हैं कि सब पाप नष्ट हो जाएंगे। जल जाएंगे।

सबको राधास्वामी।

दुर्गादास, चण्डीगढ़

मैंने यह विषय परम दयाल जी महाराज को सुनाया। उन्होंने यूं फरमाया। ब्रह्म प्रकाश है, नूर है। सन्तों की स्टेजों में जो पांच प्रकार के नूर हैं इनको पांच ब्रह्म कह दिया। ऋषि पांच अग्नि तापते थे। वह बाहिर की आग नहीं है। इन पांच स्थानों की रोशनियों को देखना है। जिसकी सुरत अपने अन्तर पारब्रह्म की सफेद रोशनी में जिसका ध्यान चला जाएगा उसके बाकी सब भाव शारीरिक, मानसिक और आत्मिक समाप्त हो जाएंगे। अगर कोई महापुरुष इस अवस्था में रहने वाला है तो वह दूसरे के ध्यान को इस मंजिल तक पहुंचाने का संकेत या मदत करके इसके शारीरिक तथा मानसिक भावों को जो कि उसमें हैं उन्हें समाप्त

करा देता है। मैं ऐसा मानता हूं। यह नहीं कि किसी ने फूंक मार कर कर्म काट दिए। एक व्यक्ति किसी मन के भ्रम में है और दुःखी है दूसरा कोई हितैषी आया उसने झूठ बोल कर या सच कह कर उसके ध्यान को वहां से हटा दिया। अब जिस व्यक्ति को मन का दुख है वह नहीं है। ऐसे ही सन्त और महात्मा जीवों को जो मन की कल्पित अवस्था में दुखी हैं, अपनी युक्ति और ख्याल से उसके ध्यान का स्थान बदल देते हैं। यह तो मैं मानता हूं कि इस तरह से कोई किसी के पाप ले लेता है। यह वहां होता है जहां मनुष्य को विश्वास होता है। अगर जीव महापुरुष पर विश्वास नहीं करता तो महापुरुष क्या करेगा ?

दुर्गादास, चण्डीगढ़

तलाश और उसका परिणाम

भूमिका

आज नया वर्ष १९७५ आरम्भ हुआ है। मैं सच्चे हृदय से चाहता हूं कि मेरे मिलने वालों और मेरा साहित्य पढ़ने वालों को धन, दौलत और सेहत मिले और उनके मन को शान्ति मिले। मेरी आयु का यह अठासिवां वर्ष है। मैं १९०५ में पन्थ में आया था। आज ७० वर्ष हो गए हैं। मुझे किसी वस्तु की खोज थी और वह करता हुआ चला आ रहा हूं। मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर चलूंगा और जो मैं कुछ मेरा अनुभव होगा संसार को बता जाऊंगा। यह पुस्तक "मेरी तलाश और उसका परिणाम" मैं सच्चे हृदय से उनको भेंट करता हूं जो जीवन में जाने या अनजाने किसी वस्तु की खोज में हैं। आज प्रातः मैं समाधि में था, कहां ठहरता था? उस स्थान पर जिसका वर्णन हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज

इस शब्द में करते हैं कि गुरु ने मैं और तू दोनों को मिटा दिया ।

आप आप में आप दिखाया, आप आप को आप लखाया ।
मैं छुड़ाय तू मैं ठहराया, मैं तू का फिर भेद मिटाया ।

इस समय मेरी यह दशा है । मैं मालिक को हजूर दाता दयाल जी महाराज के रूप में मान कर तू तू किया करता था । यह काम जो मुझको हजूर दाता दयाल जी महाराज ने दिया था वह मेरी मैं और तू को मिटाने के लिए दिया था । कल श्री बिहारी लाल पाठक ने भी हजूर दाता दयाल जी महाराज का निम्नलिखित शब्द पढ़ कर सुनाया था ।

मैं हुआ पहले तो पीछे तू हुआ । आया गुल पहले यह पीछे बू हुआ ।
मैं की अजमत है बड़ी या कि तू की है, आया जब मैं मैं फिर तू तू हुआ ।
दोनों जौहर हैं मुहीते कुल जहां, यह "अना" है हक का और वह तू हुआ ।
नगमाऐ हू हक है आलम में बलन्द, हू का नुकता राजे जुस्तोजू हुआ ।

मैं गया नैय्यर नहीं मैं का पता, मुंह से निकला मैं तो यह
मैं तू हुआ।

अब मेरी यह अवस्था है। इस अवस्था में कभी कभी अपनी हस्ती का होश नहीं रहता। जब हस्ती का होश हो नहीं रहा तो फिर तू भी समाप्त होगा। परन्तु इस अवस्था में मुझसे हर समय ठहरा नहीं जाता। क्यों ? इसका कोई उत्तर नहीं मिलता। इसलिए क्योंकि हजूर दाता दयाल जी महाराज ने कहा था कि शिक्षा को बदल जाना। मैं कहता हूं कि यहां जो कुछ भी हो रहा है यह किसी शक्ति के अधीन हो रहा है। पन्थ, सन्त, दुनिया, दुनियादारी, जीवन और मृत्यु अर्थात् जो कुछ भी हो रहा है यह उस शक्ति के अधीन है। जब इस अवस्था में मानव खोज करता हुआ इस भेद को समझ जाता है तो फिर उसको फौरन गुम हो जाना चाहिए किन्तु न तो हजूर दाता दयाल जी महाराज फौरन गुम हुए और न ही स्वामी जी महाराज फौरन गुमहुए यद्यपि उन्होंने आद घर का वर्णन करते हुए कहा है कि वहां उस अवस्था में न खालिक है न मखलूक है न राम है न रहीम है, न

गुरु है और न चेला है। कबीर साहिब भी फौरन गुम न हुए जिन्होंने यह कहा है।

जहां पुरुष तहां कछु नाहीं, कहे कबीर हम जाना।
हमरो सैन लखे जो कोई पावे पद निर्वाना॥

तो मैं शिक्षा क्या बदलूं ? कि यह जो कुछ हो रहा है, हो रहा है और होता रहेगा. जिनके मस्तिष्क में मेरी तरह खोज का जनून है उनको सन्तमत की शिक्षा से केवल अनुभव की शांति मिली। तो फिर मैं किस परिणाम पर पहुंचा कि जो हो रहा है, हो रहा है, यदि मानव इस बात पर नहीं ठहर सकता और बुद्धि रखता है तो जहां तक हो सके संसार में किसी का भला कर जाए। काम करे, परोपकार करे, खुशी और प्रेम से अपना जीवन काटे और जब उसको मौज हो, जहां चाहे मौज मालिक उसको ले जाए। इसलिए मैंने जीवन के अनुभव के बाद "इन्सान बनो" की आवाज दी जियो और जीने दो। खाओ और खिलाओ। आप सुख लो और दूसरों को सुख दो।

हो सकता है कि मैंने जो समझा है यह गलत

है। मैं तो इस आयु में ईश्वर पूजा को भी एक भ्रम और संशय समझता हूं। इन धर्मों पन्थों, और ईश्वर पूजा ने मानव जाति को बांट दिया है और घृणा, द्वेश और ईर्ष्या को पैदा कर दिया है। कुछ सांसारिक आवश्यकताओं के कारण, कुछ शारीरिक आवश्यकताओं के कारण और कुछ धार्मिक विचारों के कारण इस संसार में अशान्ति फैल गई है। सन्तमत का प्राकट्य कलयुग में केवल इसलिए हुआ कि मानव भ्रम और संशय से दूर हो जाए और मानवता के नियमों पर चलता हुआ, और अपने जीवन का काम करता हुआ, खुशी, चिन्ता व शोक रहित, परउपकार, प्रेम और स्नेह से अपना जीवन व्यतीत करे।

कई बार सोचता हूं कि शरीर के त्यागने के बाद क्या होगा ? इसके सम्बन्ध में धार्मिक सँसार वालों ने बहुत सी दलीलें दी हैं और बहुत सी बातें कही हैं लेकिन यह सब मानव के मस्तिष्क की उपज है। क्या होगा ? मुझे कुछ पता नहीं। चाहता अवश्य हूं कि शरीर त्यागने के बाद यदि कहीं जाऊं तो बता सकूं कि मेरा क्या परिणाम हुआ। कबीर

साहिब ने लिखा है :---

उत ते कोई न आया, जासे पूछूं जाए।
इत तें सब कोई जात है, भार लदाय लदाय॥

मैं तो यह समझता हूं कि जीवन चेतन का एक बुलबुला है, उसमें "मैं" आ जाती है और फिर मैं से तू निकलता है और वह इसमें फंसा हुआ सुख, आनन्द, शोक; चिन्ता और दुख अनुभव करता है।

यह मेरा नए वर्ष का सन्देशा है। मैं सच्चे हृदय से चाहता हूं कि मानव जाति का कल्याण हो। मेरे मिलने वालों और मेरे साहित्य को पढ़ने वालों को इस वर्ष आनन्द और समृद्धिशालता प्राप्त हो।

सबको राधास्वामी

तलाश और उसका परिणाम

सत्संग हजूर परम दयाल परम संत फकीरचंद जी महाराज मानवता मन्दिर, होशियारपुर

दिनाँक १५ दिसम्बर १९७४

मासिक सत्संग

धन्य धन्य सतगुरु दयाला, कृपा सागर दुख भंजन।
संकट मोचन भव भय खंडन, काम निकन्दन जन रंजन॥
कोटि काम लवि अंग विराजे, शोभाधारी हितकारी।
सुर मुनि ऋषि सब ध्यान लगावें, इन्द्र वरुण आज्ञाकारी॥

राधास्वामी! मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीर! तुमने सत्संग का यह क्या तमाशा बना रखा है क्या तुम लोगों को ठगते फिरते हो? नहीं। मित्रो! आप मेरे सत्कार योग्य और भाई हैं। हरएक वस्तु का कोई कारण होता है। मैं एक

साधारण हिन्दू था, राम, कृष्ण, ईश्वर, ब्रह्म और पारब्रह्म को मानने वाला था। मालिक को मिलने की इच्छा थी। इस सिलसिले में मौज मुझे हजूर दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज के चरण कमलों में ले गई, उन्होने मुझे सन्तमत की शिक्षा दी। सन्तमत की वाणी में लिखा है कि सन्त ईश्वर और परमेश्वर के बनाने वाले होते हैं और सतलोक से आगे अलख, अगम और अनाम होते हैं। सब मत मतान्तरों का खण्डन है, इससे मेरे दिल को ठेस लगी क्योंकि इसमें मेरे पूर्वजों का खण्डन था।

मैं सोचता था कि मैं कहां फंस गया, मैं तो मालिक को मिलने निकला था। क्योंकि हजूर दाता दयाल जी महाराज पर मेरा पूर्ण विश्वास था, वह तो टूट न सका और वाणी की मुझे समझ नहीं आती थी, इसलिए मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा हो कर चलूंगा और जो कुछ मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊंगा। इसलिए मेरे इस सारे काम का यह कारण है। यह सब मेरी ही वासना का फल है और दूसरा कारण यह भी है कि हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे जिम्मे यह

कर्तव्य लगाया था कि :—

१. निवल अवल अज्ञानी जोवों को सहायता करना ।

२. जगत कल्याण का काम करना ।

३. जीवों को भवसागर से पार करना ।

इसलिए मैं यह काम करता हूं । क्योंकि हय मेरी ही वासना थी इसलिए मैं इस काम से किसी पर उपकार नहीं करता बल्कि आप लोगों का मुझ पर उपकार है कि आप लोगों के आने से मूझे मेरे कर्म काटने में सहायता मिलती है ।

आज पौष महीना है । मैं आज अपना अनुभव कहना चाहता हूं कि मैं सन्तमत को सबसे बड़ा मानने के लिए क्यों विवश हुआ । मैंने कहा है कि कारण के बिना कोई कार्य नहीं होता । देखो । जिस कारण का हमको पता नहीं हम उसको ईश्वर की मरजी कह देते हैं । जैसे मैं जीवित बैठा हुआ हूं यदि मुझे सांस न आए तो मेरा शरीर नहीं रह सकता अर्थात् शरीर के न रहने का यह कारण बन गया । आग, पानी, मिट्टी, वायु, आकाश और या

जितना भी विज्ञान है यह सब तत्व हैं। इन सबके जोड़ का नाम कारण है। सब कुछ कारण से हो रहा है। जैसे हिमालय को दूसरी ओर वर्षा नहीं हो सकती क्योंकि वर्षा भी किसी कारण से होती है। गर्मी से पानी को भाप बनती है और भाप से बादल या Monsoon बनता हैं और वह जाकर हिमालय पहाड़ से टकराती हैं तो वर्षा होती है। हिमालय की दूसरी ओर Monsson नहीं पहुंच सकती इसलिए आप लाख ईश्वर से कहो कि वहां वर्षा कर दे, वहां वर्षा हो नहीं सकती।

ईश्वर क्या है ? ईश्वर के तीन रूप हैं। विराट पुरुष, अव्याकृत और हिरण्य गर्भ। यह जितने तत्व हैं, इनका नाम है विराटपुरुष। इन तत्वों के खेल को समझ कर मानव चांद पर चढ़ गया। हर दिशा में मानव ने बहुत प्रगति की है। फिर तो ईश्वर के विराटस्वरूप या स्थूल पदार्थ Gross Matter से बड़ा कौन है ? मनुष्य का मस्तिष्क-बुद्धि। इसलिए Gross Matter स्थूल प्रकृति में सबसे बड़ा इन्सान है। तुम लाख ईश्वर २ करते रहो ईश्वर के नियम को जब तक तुम अपनाओगे नहीं तुम सांसारिक

जीवन में सफल नहीं हो सकते। मानव इस प्रकृति के संसार में कितनी उन्नति कर रहा है, विज्ञान ने कितनी उन्नति की है, डाक्टरी विद्या देखो कहां तक पहुंच गई, दिल बदले जा रहे हैं। इसलिए वह इन्सान जो हर प्रकार का ज्ञान रखता है अर्थात् जो सत्गुरु है उसका दर्जा ईश्वर से बड़ा है। आध्यात्मिक जगत की तो बात ही अलग है, जो व्यक्ति बाहर के संसार अर्थात् स्थूल पदार्थ का ज्ञान रखता है वह इस ज्ञान से तथा अपनी बुद्धि से अपना जीवन अच्छा बना सकता है और इस ज्ञान से विनाश भी ला सकता है जैसे यह ऐटम बम बना दिए गए हैं, इससे नाश भी हो सकता है। केवल दस बारह बम सारे संसार के लिए काफी होंगे। आप जानते ही होंगे कि डाक्टर खुराना यह दावा करते हैं कि मानव की जोन को बदल कर अर्थात् जिस प्रकार की चाहो संतान पैदा कर सकते हो तो इससे सिद्ध हुआ कि Gross Matter विराटपुरुष की शक्ति से आदमी का मस्तिष्क महान और शक्तिशाली है। ईश्वर या प्रकृति प्रलय करे या न करे किन्तु मानव जब चाहे ऐटम बम से संसार में प्रलय कर सकता है।

ईश्वर का दूसरा रूप अव्याकृत है। भाव विचार या संकल्प के संसार का नाम अव्याकृत है। तुमने ईश्वर के भक्तों को देखा होगा और सुना होगा। मीरा बाई को विष दिया गया किन्तु उसने हृदय में यह विश्वास किया हुआ था कि ठाकूरों का प्रसाद अमृत होता है इसलिए उस विष ने उस पर कोई प्रभाव नहीं किया। ऐसे ही लोग मुझ पर विश्वास करते हैं मेरा रूप उनके काम कर जाता है और उनके पत्र मुझे आते हैं परन्तु मुझे कोई ज्ञान नहीं होता और न ही मैं जाता हूं, यह सारा विश्वास का और उनके मन का खेल है। मैं अपने जीवन के अनुभवों के आधार पर कहने का साहस करता हूं कि द्रोपदी के चोर बढ़े, धन्ने भक्त की गऊऐं कृष्ण जी ने चराईं और नाम देव का प्रसाद भी मूर्ति ने अवश्य खाया होगा। यह विचार का संसार है, विचार में बहुत शक्ति है और विचार की शक्ति से इस संसार में सबकुछ होता है इसका नाम अव्याकृत है इसमें बड़ाई किस की है ? ज्ञान विश्वास और श्रद्धा की। यह ज्ञान विश्वास और श्रद्धा कौन देता है। बाहर का पूर्णपुरुष। विश्वासरूपी ज्ञान

इन्सान के मानसिक संसार को बदल देता हूं और कई प्रकार के चमत्कार हो जाते हैं। यह ग्रोवर साहिब रेलवे गार्ड हैं, मुझ पर विश्वास करते हैं, गाड़ी ले कर जा रहे थे, गाड़ी में कालेज के लड़के थे वह इनको तंग करने लगे। बार बार जंजीर खींच कर गाड़ी को रोक लेते थे और झगड़ा करते थे। यह घबराए। मुझे याद किया। उन्होंने बताया कि आप आए और मुझे समझाया। इसलिए इस संसार को अच्छा बनाने के लिए विश्वास और श्रद्धा की आवश्यकता है। अच्छी बात का विश्वास करो। सदैव यह विचार रखो कि जो होगा अच्छा होगा। "जो करी है सो भली।" यदि यह विश्वास हो जाए तो जो भी होगा वह अच्छा ही होगा। यह विश्वास तो गुरु की दया से होता है इसलिए गुरु का दरजा ईश्वर अर्थात् विराटपुरुष और अव्याकृत से बड़ा है। विश्वास पहाड़ों को तोड़ देता है और मैं विश्वास की शक्ति को मानता हूं इसके लिए कुछ तो मेरे अपने अनुभव हैं और कुछ सत्संगियों के अनुभव हैं जो यह कहते हैं कि बाबा जी ! आप प्रकट हुए और यह कर

दिया और वह कर दिया। मैं तो कहीं जाता नहीं लोगों का विश्वास काम करता है। इसलिए ऐ मानव ! तेरी हस्ती ईश्वर ब्रह्म पारब्रह्म से बड़ी है शर्त यह है कि तुमको गुरु मिल जाए और तुमको उस पर पूर्ण बिश्वास हो। तुम तो यह समझते हो कि गुरु के दर्शन करने से और गुरु से नाम ले लेने से तुम तर गए। भोले भाले लोगों ! गुरु की बात पकड़ो और उस पर अमल करो तब बेड़ा पार होगा। यह रसूल आजाद नामी व्यक्ति बम्बई से आया है। चार पांच वर्ष हुए मैं बम्बई गयाइसने भी मेरा सत्सग सुना लेकिन मुझे कोई पता नहीं और न ही मैं इसको जानता था। इसने मेरी बातों पर अमल किया अब यह कहता है कि इसकी सारी बुराईयां छूट गईं। इसने मुझ पर विश्वास कर लिया। पहले दो अढ़ाई सौ रुपए मासिक की नौकरी करता था अब करोवार करता है और हजारों रुपए कमाता है और मानवता मन्दिर की भी सहायता करता है। अब आप यह सोचो कि इसको जो कुछ मिला यह किसने दिया। क्या मैंने दिया ? नहीं। इसके विश्वास ने दिया। इसके अपने ही

विश्वास से इसका सब कुछ बदल गया। शास्त्र कहते हैं कि :---

कर्न परधान विश्व करि राखा।
जो जिस कीन तैसो फल चाखा।

कर्म क्या है ? तुम्हारी वासना, तुम्हारा विचार और तुम्हारी इच्छा। यदि मनुष्य अपने विचार नेक रखे, आशावादी रहे और दूसरों का और अपना भला चाहे तो वह अपने संसार को अच्छा बना सकता है क्योंकि यह विचार का संसार है और मनोमय जगत है। तुम्हारे संकल्प को तुम्हारे अनुकूल कौन बना सकता है ? गुरु का ज्ञान। इसलिए गुरु का दरजा अव्याकृत से बढ़ कर है। इसलिए कहा करता हूं कि अपने घरों में शान्ति रखो और आपस में प्रेम से रहो अपने परिवार का भला चाहो घृणा, द्वेष और ईर्ष्या मत रखो। तुम्हारे संकल्प से ही सब होता है। आजकल क्या हो रहा है ? पति पत्नी का झगड़ा है, बाप बेटे का झगड़ा है, भाई २ का झगड़ा है, सरकार और जनता का आपस में विरोध है। क्योंकि संकल्प मय संसार है इसलिए इन झगड़ों का फल क्या होगा ? विनाश। यदि एक

दूसरे का भला चाहोगे और प्रेम से रहोगे तो तुम्हारा जीवन सुख से और खुशी से व्यतीत हो जाएगा, यह है शिक्षा जो मैं देना चाहता हूं। मैं अपनी पूजा नहीं करवाना चाहता। यदि मैं स्पष्ट वर्णन नहीं करता तो मेरे दिल में कपट होगा और तुम लोग अज्ञान में आ कर पैसा दोगे और यदि मैं उस पैसे को खा जाऊंगा तो मेरा कर्म खराब होगा और मुझे उसका फल भुगतना पड़ेगा।

क्योंकि मेरे जिम्में निबल, अबल और अज्ञानी जीवों की सहायता करने का कर्तव्य है इसलिए मैं यह अपना कर्तव्य पूरा कर रहा हूं। अव्याकृत सूक्ष्म प्रकृति है और यह तुम्हारा विचार है, यह तुम्हारा मानसिक जगत है। यदि कोई पूर्ण गुरु मिल जाए तो उसकी बात पर अमल करके तुम अपने मानसिक संसार को अच्छा बना सकते हो। हाय हाय करना छूट जाता है और मन का कुढ़ना समाप्त हो जाता है इसके लिए सन्तों के मार्ग में विश्वास है :--

आस कर गुरु की दया की हो निराश न तू कभी।
जो हुआ निरास समझ ले गुरु का दास न तू कभी।

आप लोग आए हैं आप को गुरु बताता हूं। सत्गुरु नाम है सच्चे ज्ञान का और वह सच्चा ज्ञान मैं देता हूं। लोग मुझे अहंकारी कहते हैं लेकिन मैं अहंकारी नहीं हूं। संसार में जीवन व्यतीत करने के लिए कोई न कोई काम सीखो, कमाओ और अपना जीवन बनाओ। अपने विचारों को शुद्ध रखो और सबसे प्रेम रखो तुम सुखी हो जाओगे और तुम्हारा जीवन बदल जाएगा। इसलिए मैं कहता हूं कि सन्त ईश्वर से बड़े होते हैं।

अब रह गया हिरण्य गर्भ। इसका शाब्दिक अर्थ है सोने का अंडा। जब शरीर को छोड़कर त्रिकुटि में जाओगे तो वहां लाल रंग का सूर्य नजर आएगा, उसका नाम हिरण्य गर्भ है। यह ओं का स्थान है। जो आदमी वहां का साधक नहीं है उसका मन निर्बल रहेगा और उसके विचार की शक्ति बहुत थोड़ी होगी। यदि व्यक्ति की दस पंदरह मिण्ट हर रोज इस स्थान पर समाधी लग जाएगी तो उसका मनोबल बढ़ जाएगा जैसे कि रोज रोज के हथोड़ा चलानेसे लोहार के बाजू दूसरों की अपेक्षा शक्ति-शालीहोते हैं क्योंकि उनमें हर समय सुरत की धार

चलतो है ऐसे ही आप लोग उस स्थान का साधन करके अपने मन को शक्तिशाली बनाओ जिससे कि तुम्हारा जीवन अच्छा बने लेकिन यदि तुम अपने मन को एकत्र नहीं कर सकते और अपने आप को प्रकाशमय नहीं कर सकते तो आप जीवन में सफल नहीं हो सकते। इसीलिए हिन्दुओं में नौ वर्ष के बच्चों को गायत्री मन्त्र का साधन दिया जाता था यदि यह साधन या सुमिरन ध्यान गुरुओं के उपदेश अनुसार नहीं है तो तुम हानि उठाओगे। वाणी में आता है कि :—

गुरु विन माला फेरते गुरु विन देते दान।
गुरु विन नाम हराम है जा पूछो वेद पुरान॥

संसार ने यह समझा हुआ है कि गुरु से नाम ले लो और बस। तुम भूल में हो। पहले सत्संग में बैठ कर यह सीखो कि तुमने विचार कैसे रखने हैं और तुम्हारी वासना कैसी होनी चाहिए। जब तक तुमको इस बात का पता नहीं है तुम अभ्यास से लाभ की जगह हानि उठाओगे। यही कारण है कि मैं किसी को नाम नहीं देता और सत्संग कराता हूं। नाम कहीं से भी ले लो कोई बात नहीं। मैं यह

विचार देता हूं कि तुमने अपने विचार कैसे रखने हैं। मुझे इस बात का अनुभव कैसे हुआ ? जबलपुर की एक स्त्री अपने पति और तीन बच्चों को साथ ले कर मेरे पास फिरौजपुर आई। वह त्रिकुटि के स्थान पर मेरे रूप का ध्यान किया करती थी। उसने कहा कि दाता दयाल जी ! मेरे बच्चे मुझे अभ्यास करने का समय नहीं देते इसलिए मैं दुख अनुभव करती हूं। मैंने उससे पूछा कि तेरी सास है ? नहीं। तुम्हारी ननद (पति की बहन) है ? नहीं। तुम्हारी मां है ? नहीं। उसके पति को भी समय नहीं मिलता था वह प्रातः ड्यूटी पर जाता था और रात को आता था तो मेरे अनुभव में आया कि क्योंकि यह त्रिकुटि में अभ्यास करती है और बच्चों के कष्ट से बचना चाहती है। बच्चों को सम्भालने का और कोई साधन नहीं है। इसलिए इसके तीनों बच्चे मर जाएंगे। वलीराम हकीम मेरे पास बैठे हुए थे मैंने उनको यह बात बता दी। नौ महीने में तीनों बच्चे मर गए। यह १९४२ की घटना है। इसके बाद मैंने किसी को नाम नहीं दिया। केवल सत्संग कराता हूं। लोग मेरा सत्संग सुनते हैं,

मेरा ध्यान करते हैं, उनकी वासना और उनके विश्वास के अनुसार उनके काम होते रहते हैं। वह यह समझते हैं कि बाबे ने यह कर दिया बाबे ने वह कर दिया · मैं कुछ नहीं करता उनको उनके विश्वास का फल मिलता है।

मैं पहले इसलिए नहीं बोलता था कि यदि मैं कुछ बोलूंगा तो यह गद्दियों और डेरों वाले मेरी सच्चाई के कारण मुझे तंग करेंगे क्योंकि इनके यहां तो यह है कि जितने आदमियों को नाम दिवा दोगे उतनी गऊओं के दान के बराबर पुन का फल तुमको मिलेगा। मैं आगरे से प्रेम वाणी लाया उसमें हजूर महाराज ने लिखा है कि जिनके मन गन्दे हैं और जो अपने मन के गन्दे विचारों को ठीक नहीं करना चाहते उनको बिलकुल नाम नहीं देना चाहिए अन्यथा उनकी हानि होगी। इस बात से मुझे उत्साह हो गया। शास्त्र भी यही कहते हैं कि शूद्र गायत्री मन्त्र न सुन पाए। शूद्र कौन है ? शूद्र वह है जिसका मन ठीक नहीं और जिसके विचार ठीक नहीं जिसका मन शुद्ध नहीं। इसलिए मैं जो किसी

नाम नहीं देता यह गलत नहीं करता बल्कि ठीक करता हूं। क्योंकि मैं सत्संग कराता हूं इसलिए आज मुझे विचार आया कि तुमने यह क्या पाखण्ड का जाल बना रखा है। मित्रो ! यह मेरा पाखण्ड नहीं है। मैं संवेदनाशील हृदय लेकर संसार में आया हूं हजूर दाता दयाल जी ने एक शब्द में लिखा है :—

आए आए दिल में आए दर्दे दिल
दिल का है दिल में समाए दर्दे दिल
इतर बेज़ी मे है हम शकले कमल
यह कमल दिल में खिलाए दर्दे दिल
मुज्तरिब को राहत और फरहत मिले
दिल में गर अपने बसाए दर्दे दिल
सूते सरमद गोशज़द हो जलदतर
गाए जब कोई नवाए दर्दे दिल
दर्दे दिल वह समझे जो हमदर्द हो
हमको हमदरदी सिखाए दर्दे दिल
राधास्वामी ने किया फजलो करम
दर्दे दिल को दी दवाए दर्दे दिल।

मैं दर्दे दिल लेकर आया हूं किन्तु किनके लिए ? जो इस संसार में जो दुखी और अशान्त हैं और सुख

की इच्छा रखते हैं, मैं उनको अपने अनुभव वर्णन करता हूं। आप लोग आए हैं सत्संग से लाभ उठाओ। अपने मन और अपने बिचारों को शुद्ध रखो, फिर जब तुम साधन करोगे तो तुम्हारा जीवन बदल जाएगा। आप लोग दूर दूर से सरदी में आए हैं। मेरे सिर पर भी कोई जिम्मेदारी है इसलिए आपसे कहता हूं कि गुरु का दरजा विराट् पुरुष, अव्याकृत और हिरण्य गर्भ से बढ़कर है। क्योंकि वह तीनों के खेल में आप को ठीक मार्ग बताकर शारीरिक, मानसिक, और आत्मिक सुख और शान्ति प्राप्त करने के लिए ज्ञान देता है।

स्वामी जी महाराज ने तो ऐसे कह दिया कि सन्त ईश्वर परमेश्वर से बड़े है और हजूर दाता दयाल जी महाराज ने इस प्रकार से लिख दिया है :—

मैं नहीं राम कृष्ण का सेवक ईश ब्रह्म नहीं जानु
मैं फकीर का नाम दिवाना सबसे बढ़कर मानु
जो फकीर मोहे दर्शन देवे अपने भाग सराहूं
अपने तन के चाम की जूती मैं पग फकीर पहनाऊं

मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव संसार

को बता जाऊंगा। मैंने सारा जीवन खोज में खो दिया जो कुछ मुझे मिला वह रहता हूं किन्तु मुझे दावा किसी बात का नहीं। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे यह काम करने की आज्ञा दी थी। मैं यह सिद्ध करना चाहता हूं कि सन्त का दरजा ईश्वर से कैसे बड़ा है :—

ब्रह्म बढ़े चिन्तन करे यही ब्रह्म का अर्थ
यही ब्रह्म का अर्थ, और कोई अर्थ न दूजा
सोचे बढ़े सो ब्रह्म, वही करे ह्म कीं पूजा

ब्रह्म का काम है वढ़ना, आप देखो कि सूर्य. अपनी किरणों से सृष्टि को रचता है उसकी किरणों से ही सब बनस्पतियां पैदा होती हैं। सूर्य की किरणों में जो पैदा करने की शक्ति होती है, वह ब्रह्म है। हमारे अन्तर में जो प्रकाश है वह ब्रह्म है। प्रकाश से ही सारी रचना होती है। हमारे अन्तर में जो वस्तु प्रकाश को देखती है वह हम हैं और वही उस मालिक की अंश अर्थात् सुरत है। सुरत यहां आ के फंस गई और अपने आप को भूल गई यदि वह ब्रह्मा विष्णु और महेश की धारों को अपने अनुकूल बना ले तो उसको कोई दुख और

झेलना नहीं पड़ेगा ।

तुम शरीर, मन, प्रकाश और शब्द से अलग हो तुम इन सबके साक्षी हो इसलिए तुम्हारा दरजा इन सबसे अर्थात् ईश्वर, विराटपुरुष, अव्याकृत, हिरण्य गर्भ या पारब्रह्म से बड़ा है । हम ही तो इन सबको देखते हैं इसलिए मानव का दरजा इन सबसे बड़ा है, हम इन सबसे अलग हैं। इस संसार को या स्थूल पदार्थ को प्रकाश या ब्रह्म ने बनाया है परन्तु हमको न विराटपुरुष ने बनाया और न अव्याकृत ने बनाया और न ही हिरण्य गर्भ ने बनाया है और न ही ब्रह्म ने बनाया है । हम इन सबसे जुदा है और इन सब के साक्षी हैं । यदि सुरत को अपने रूप का ज्ञान हो जाए तो वह अपने शरीर मन और प्रकाश पर नियन्त्रण कर सकती है । इससे मानव का दरजा इन सबसे बड़ा है । हम जात हैं और राधास्वामी हैं किन्तु हम सृष्टि में आ गए और यहां फंस गए, इसलिए कोई ईश्वर का कैदी है कोई विराटपुरुष का कैदी है कोई ब्रह्म का कैदी है और कोई किसी का कैदी है और अपने रूप का ज्ञान नहीं है ।

ब्रह्म की पूजा क्या है ? जब तक जीवन है

बढ़ो । शारीरिक उन्नति करो मन की तरक्की करो और आत्मा की उन्नति करो । जब खूब बढ़ जाओगे तब वैराग्य पैदा होगा । जब तक किसी वस्तु का अनुभव नहीं हो जाता तुम उसको छोड़ नहीं सकते । उदाहरण के रूप मे तुम देखो कि एक निर्धन पुरुष है वह परिश्रम करता है और कमाता है उसके मन में हर समय धन का विचार रहता है परन्तु जब उसके पास रुपए जमा हो जाते हैं तो फिर वह रुपए की चिन्ता नहीं करता । ऐसे ही पहले खूब बढ़ो और उन्नति करो तब तुमको वैराग्य पैदा होगा और अपने निज घर वापिस जाने की इच्छा होगी । राधास्वामी मत वाले बच्चों को निवृति की शिक्षा दे देते हैं, यह भूल है । उनके लिए शिक्षा यह होनी चाहिए कि पहले खूब बढ़ो । मैं अपनी बात जानता हूं । मेरा आरम्भ से ही निवृति मार्ग था । सेठ दुर्गादास की सगाई होने वाली थी, मैंने उनको कहा कि क्या करोगे विवाह करके । उसने हजूर दाता दयाल जी महाराज से पूछा, उन्होंने विवाह की आज्ञा दे दी । दुर्गादास ने कहा कि महाराज ! पण्डित फकीर चन्द जी महाराज ने विवाह न करने

को कहा है। उन्होंने कहा कि उससे पूछो कि तुमने दो विवाह क्यों करवाए हैं। इसलिए जीवन को अनुभव से गुजारो और युवकों की भावनाओं को मत कुचलो और उनको सीधे मार्ग पर लाओ। दौड़ते हुए घोड़े को एकदम रोकने का यत्न मत करो बल्कि उसका मार्ग बदलो। पहले बढ़ो। जब अनुभव हो जाएगा तो अपने आप निवृति मार्ग की ओर आ जाओगे। सन्तों का मार्ग सबके लिए नहीं है।

तुम ब्रह्म से बड़े हो, तुम अनामी, अकाल, सर्वाधार या राधास्वामी दयाल की अंश हो। जब यह सृष्टि बनी और आदमी बना तो यह अधूरा था फिर इसमें जब सुरत की धार आई तब वह पूरा बना। लेकिन सुरत इसमें फंस गई। गुरु मिला अनुभव से गुजारा और सच्चाई वर्णन की और निज घर पहुंचने की विधि बताई।

बढ़ो वढो बढ़ चलो, सोच कर नित ही वढ़ना।
जीवन का तुझे रस मिले बृद्धा में जीवन गढ़ना॥

बढ़ो और अवश्य बढ़ो! मगर सोच समझ कर बढ़ो। यह सोचने और समझने की शक्ति गुरु देता

है। बढ़ोगे तो अवश्य किन्तु यदि तुमको ठीक ज्ञान नहीं तो मारे जाओगे। बढ़ना तो हर जगह मौजूद है मगर सोच समझ के बढ़ो अन्यथा हानि उठाओगे। इसलिए किसी गुरु या भेद ज्ञाता की आज्ञानुसार चलो। इसलिए गुरुमत को महिमा है। वृक्ष बढ़ता है किन्तु जो वृक्ष गलत तरीके से बढ़ता है माली उसकी शाखें काट देता है। महात्मा गाँधी को यदि कोई पूर्ण गुरु मिला होता तो देश के विभाजन के समय इतनी अधिक हानि न होती। भेद ज्ञाता अच्छी प्रकार जानता है इसलिए गुरु का दरजा सबसे बड़ा है। एक आदमी डाके मारता है या Smuggling करता है उसके पास पैसा तो हो जाएगा किन्तु इसका परिणाम दुख होगा। आजकल तुम Smuggling करने वालों को देख रहे हो उन्होंने पैसा तो कमाया परन्तु आज जेलों में पड़े दुख उठा रहे हैं। क्यों ? क्योंकि अनुचित विचार समझ के साथ रुपया कमाया—

वृद्धी भाव चिन्तन नहीं उसका जीना व्यर्थ।
ब्रह्म बढ़े चिन्तन करे वही ब्रह्म का अर्थ।

तुम्हारे अन्तर नाड़ी २ में खून चलता है लेकिन

जब प्रकाश समाप्त हो जाता है। सदा उन्नति करने को इच्छा रखो।

आप लोग अपने अपने गुरुओं की स्तुति करते हो। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने गुरु की स्तुति में एक शब्द लिखा है।

धन्य धन्य सतगुरु दयाला, कृपा सागर दुख भंजन।
संकट मोचन भव भय खंडन काम निकन्दन जन रंजन।

यह उस गुरु की स्तुति है जिसकी संगत से तुमको यह वस्तुएं प्राप्त होती हैं इसलिए जो वह कहता है उस पर अमल करो तब वह वस्तुएं तुमको मिल सकती हैं अन्यथा नहीं। अन्तर में जो गुरु है वह तो सुरत रूप में तुम स्वयं ही हो इस सुरत को बाहर के गुरु के चरणों में डाल दो वह तुमको इस संसार में ठीक प्रकार से खेलने का ढंग बताएगा। यदि मुझे कोई ज्ञान दाता समझ कर मेरी सेवा करता है तो मुझे कोई दुख नहीं है लेकिन किसी अज्ञानी से कुछ लेकर मैं खा जाऊं, जैसे यह रघुवीर कहता है कि बाबा जी ! आप प्रतिदिन मेरा काम करते हैं। तो मैं कहां जाऊंगा ? अपने कर्म का फल

मुझे भोगना पड़ेगा। मुझे भ्रम आ गया है कि इन महात्माओं ने सच्ची बात नहीं बताई और अनावश्यक धन और मान लिए। इसलिए उन्होंने कष्ट उठाया। अब आप देखो कि सन्त कृपाल सिंह जी तो चोला छोड़ गए अब वहां उनके डेरे में क्या हो रहा है। इनके पास अमरीका से एक व्यक्ति का पत्र आया। उसने लिखा कि सन्त कृपाल सिंह जी मेरे अन्तर आए और कहा कि मेरा लड़का गद्दी का अधिकारी है। क्या सचमुच सन्त कृपाल सिंह जी उसके अन्तर गए ? बिलकुल नहीं। कोई कहता है कि मेरे अन्तर राम आए, कोई कहता है कि कृष्ण आए, कोई कहता है हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज आए, कोई कहता है कि सन्त कृपाल सिंह जी आए और कोई कहता है कि बाबा फकीर आए। कोई बाहर से नही आता। इस एक बात को परदे में रख कर इन गुरुओं और महात्माओं ने भोले भाले अज्ञानी जीवों को लूटा। मैं तुम लोगों को इस लूट से बचाने के लिए आया हूं। तुम लोगों ने अपने बच्चों का पेट काट के यह डेरे और धाम बनाए है। मैंने हजूर महाराज की जीवनो जो कि

उनके पोते ने लिखी है। पढ़ी है। उसमें लिखा हुआ है कि एक बंगाली हजूर महाराज जी से नाम लेने आया लेकिन हजूर महाराज जी पूरे हो चुके थे। बंगाली को बहुत दुख हुआ और वह रोने लगा। हजूर महाराज जी का रूप प्रकट हुआ और उस बंगाली से कहा कि मत रोओ मैं तो पीपल मण्डी में रहता हूं।

इन गुरुओं और महात्माओं ने ऐसी ऐसी रोचक और भयानक बातें कह कर अज्ञानी जीवों को जकड़ा है कि अब इन को यदि कोई सच्चाई भी भी वर्णन करे तो उनको विश्वास नहीं आता। संसार सच्ची बात को सुनने के लिए तैयार नहीं। इन गुरुओं ने संसार को पागल बना रखा है।

मानव स्वयं पूर्ण है और सर्वाधार की अंश है। क्योंकि आजकल गुरुवाद में पाखण्ड आ गया है इसलिए मैं अनामी धाम से फकीर के चोले में संसार को सच्चाई वर्णन करने के लिए आया हूं। मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है उनके अनेक प्रकार के काम करता है लेकिन मुझे कोई पता नहीं

और न ही मैं किसी के अंतर जाता हूं। यह सब जीव का अपना विश्वास है। मैं खूब जानता हूं कि मेरा स्पष्ट वर्णन मन्दिर की जड़ों पर कुल्हाड़ी का काम करता है लेकिन मैं चार दिन के जीवन के लिए किसी से धोखा नहीं करना चाहता। मन्दिर चले या न चले मुझे इस बात की चिन्ता नहीं। मुझे पहले अपना आप है और बाद में मन्दिर है। मैं भी यदि परदा रखता तो लाखों और करोड़ों रुपए जमा कर लेता किन्तु मेरी आत्मा मुझे ऐसा करने की आज्ञा नहीं देता। दूसरे महात्मा बाहर के देशों में जाते हैं और लाखो रुपए, हीरे, जवाहरात लाते हैं। मैं अमरीका गया वहां कई बड़े बड़े आदमियों के अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है वह मुझे मिलने आए अपनी घटनाएं बताईं कि आप हमारे अन्तर आते हैं और हमारे काम कर जाते हैं लेकिन मैंने उनसे साफ साफ कह दिया कि किसी के अन्तर नहीं जाता यह सब तुम्हारे विश्वास का फल है।

दुरगियां ! तुमने एक सच्चे आदमी की सहायता

की है तुम्हारा बहुत २ आभारी हूं ।

धन्य धन्य सतगुरु दयाला, कृपा सागर दुख भंजन ।
संकट मोचन भव भय भंजन, काम निकन्दन जग रंजन ।।

बाहर का गुरु ज्ञान देता है । यदि तुमको अपने रूप का ज्ञान हो जाए तो तुम अपने मन पर नियन्त्रण करके अपना जीवन बना सकते हो । यही राधास्वामी मत है और यही वेदों का मार्ग है ।

कोटि काम छवी अंग विराजे शोभाधारी हितकारी ।
सुर नर मुनि सब ध्यान लगावे, इन्द्र वरुण आज्ञाकारी ।

जब आदमी को ज्ञान हो जाता है तो उसके अनेक प्रकार के विचार उनके नियन्त्रण में आ जाएंगे और उसका जीवन सफल हो जाएगा । तुम्हारा रूप क्या है ? तुम स्वयं राधास्मामी हो लेकिन यह ज्ञान कौन देता है । बाहर का कोई पूर्ण गुरु—

घर में घर दिखलाए दे सो सतगुरु पुरुष सुजान ।

वह है पूरा गुरु । जो अपनी गद्दी के साथ जीवों को बांधता है वह गुरु नहीं है परन्तु हर एक आदमी इस ऊंची बात को समझ नहीं सकता ।

जिज्ञासुओं के लिए यही ठीक है कि विश्वास करो मगर उनको लूटो नहीं उनके अज्ञान का अनुचित लाभ उठाना महापाप है। लोग तो कहते हैं कि सन्त सतलोक को गए परन्तु मैं कहता हूं कि जिन्होंने जीवों को सच्चाई वर्णन नहीं की और उनको अज्ञान में रख कर उनकी सम्पत्तिएं लूटी हैं और उनके साथ धोखा किया है वह कैसे वहां गए? वहां तो वह जा सकता है जिसका हृदय स्वच्छ है और जो छल कपट से बरी है। मैं आपको यह कहना चाहता हूं कि एक स्थान पर विश्वास रखो और जहां तुम्हारा विश्वास है उसको पूर्ण मानो और उसको यह समझो कि वह न होशियारपुर में है न व्यास में है, न आगरे में है, और न चिन्तपूर्णी में है वह हर समय तुम्हारे पास है।

हजूर दाता दयाल जी महारा मुझे कहा करते थे—

"गुरु तो तेरे पास फकीरा गुरु तो तेरे पास।"

किन्तु मेरी समझ में नहीं आया था, मैं तो

उनको लाहौर में या धाम में समझता था। यह समझ देने के लिए उन्होंने मुझे यह काम दिया था। अब तुम्हारे अनुभवों के कारण मुझे यह बात समझ आ गई। वह गुरु तो एक शक्ति है तुम किसी भी रूप में उसको मान लो और यह विश्वास करो कि वह हर समय तुम्हारे पास है परन्तु यह समझ शीघ्र आती नहीं है, जीव सहारा चाहते हैं। इसलिए जो जीव को सहारा देते हैं वह धन्य हैं लेकिन जीवों के अज्ञान का अनुचित लाभ न उठाएं।

शेष सहस मुख वरणे महिमा, नारद शारद गुन गावें ॥
अस्तुति ठानें पूजा धारें भक्ति अनूपम वर पावें ॥

एक मालिक तो ऊपर रहता है, एक तुम्हारे अन्दर उस मालिक की अंश तुम्हारी सुरत है और यही मुख्य है। देखो मैं तुम लोगों को अपने पीछे नहीं लगाना चाहता बल्कि तुम लोगों को आजाद करना चाहता हूं। मैं तुम लोगों को बैल नहीं बनाना चाहता (I am the liberator) आप लोग आए हैं अपने अपने हित की बात ले जाओ। विवाह

हो जाने पर स्त्री को विश्वास हो जाता है कि उसका पति है वह प्रतिदिन अपने माथें पर सुहाग का टिक्का लगाती है उसका पति चाहे हजार मील की दूरी पर हो। ऐसे ही तुम लोगों को मालिक का विश्वास होना चाहिए। मैं तुम लोगों को तुम्हारे ही अन्तर वापिस करना चाहता हूं। मेरी बात को समझो। आजकल संसार टेकी हो गया है और अपने मत को अच्छा और दूसरों को बुरा समझता है :--

जग में मानुष कोई न देखा
जो देखा है सो बैल बना है, बैल पशु के रूपा।
बैल सभाव फिरत नित डोलैं क्या पर्जा क्या भूपा।
कोई बैल बना गोरख का कोई बैल शंकर का।
कोई बैल है रिति रसम का कोई मिट्टी कंकड़ का।
कोई बैल है चार वेद का, कोई षट दर्शन का।
अपनी किसी ने खबरि न पाई, देखा न मुख दर्पन का।

मैं तुम लोगों को यह बता रहा हूं कि तुम विराटपुरुष, अव्याकृत, हिरण्य गर्भ, ब्रह्म और पारब्रह्म से भी अलग वस्तु हो। तुम्हारी सुरत इस मालिक के घर से आई हुई है। सुरत के आने से ही यह शरीर पूर्ण बना। परन्तु यहाँ आ के

फंस गई। गुरु मिला। उसने चिताया कि क्यों यहां फंसे हुए हो तुम तो सतपुरुष की अंश हो इसलिए अपने आपको निर्बल मत समझो।

पन्थ के बैल पन्थ में डोले, भेख भिखारी लाखो।
यह सब पशु है नर नहीं कोई देख ले अपनी आंखों।

यद्यपि पशु की सेवा होती है परन्तु फिर भी वह बन्धा हुआ रहता है। तुम्हारी सुरत सर्वाधार की अंश है और आजाद है लेकिन यहां आ के बन्ध गई और दुख सुख उठाती है।

गुरु पशु नर पशु तिरया पशु वेद पशु संसार।
मानुष ताहे जानिए जा में विवेक बिचार।
कहै कबीर सुनो भाई साधु बैल से बच कर रहना।
पक्षपात का सींग अड़ंगी दुख क्लेश क्यों सहना।

इस समय देखो हरएक धर्म का एक दूसरे के साथ झगड़ा, घृणा तथा द्वेष, ईर्ष्या है। यह संसार क्या है? मैं सोचता हूं कि सन्तों का कलियुग में आने का क्या तात्पर्य है? सन्त संसार में इसलिए आते हैं कि जीवों को असलियत वर्णन की जाए और उनका एक दूसरे से जो घृणा और द्वेष है

उसको समाप्त किया जाए। अब कलयुग में सौ वर्ष का सतयुग आएगा। ज्योतिष में एक अन्तर दिशाहोती है उसमें एक ही ग्रह में सारे ग्रह भुगत जाते हैं ऐसे ही कलयुग में सौ वर्ष का सतयुग आएगा। सन्त जो शिक्षा दे गए या मैं जो शिक्षा देता हूं यह सौ साल के सतयुग की लड़ी का पूर्वज्ञान है और मार्ग दर्शक है।

कारण के बिना कोई कारज नहीं होता। (आवश्यकता और पूर्ती) Demond and supply का नियम हर समय और हर जगह काम करता है और यही शिक्षा मैं देता हूं। शिक्षा तो सबने यही दी किन्तु इन गद्दियों और डेरे वालों ने परदा रखा और सच्चाई वर्णन नहीं की और धन इकठ्ठा किया।

जो कुछ मैंने कहा है यदि तुम इसको समझ कर अमल करो तो बहुत अच्छा है। सरल उपाय यह है कि एक इष्ट बनाओ उस मालिक का तो कोई रूप नहीं है, उसको किसी रूप में मान लो परन्तु उसको पूर्ण मानो। मैं यह नहीं कहता कि तुम मेरा

रूप बनाओ। तुम जिस धर्म के हो, जिस पन्थ के हो, जहां तुम्हारा विश्वास हो उसका रूप बनाओ। बजाए इसके कि तुम्हारा मन गलत विचार उठाता रहे इसे किसी आवश्यक काम में लगाओ। बाकी समय अपने मन को सुमिरन ध्यान दो। तुम्हारे ही विश्वास से तुम्हारा जीवन सुखदायक हो जाएगा। जिस पर तुम्हारा विश्वास है उसको हर समय अपने पास समझो और उसको सदैव तुम्हारी सहायता करने वाला समझो। कभी निराश नहीं होना चाहिए। सदैव यह समझो कि मालिक जो करेगा अच्छा करेगा। जो होगा अच्छा होगा इस विश्वास से फिर ज्यादा अभ्यास करने की भी आवश्यकता नहीं रहती। नन्दलाल हलवाई की टांग टूट गई थी वह मुझ पर विश्वास करता था वह छे महीने हस्पताल में रहा, वह कहता है कि आप हस्पताल में मेरे साथ रहते थे और अब भी आप मेरे सारे काम कर जाते हैं। मैं सोचता हूं कि कौन सहायता करता है ? ऐ मानव ! सब तेरा अपना ही विश्वास है। इसलिए एक स्थान पर टिक जा—

थिर कर बैठो साधन प्यारे।
सतगुरु तेरे काज संवारे।

मैं यह नहीं कहता कि अपना पन्थ या धर्म छोड़ दो। किसी गुरु ने तुमको कुछ नहीं देना। सब तुम्हारे अपने ही कर्म, विश्वास और नियत का फल हैं। इस शिक्षा में दोष भी है। इससे अज्ञानी जीवों का अन्ध विश्वास टूट जाता है परन्तु मुझे अपनी जान प्यारी है। यदि धोखे में आप लोगों से रुपया लेकर मन्दिर वालों को खिलाऊंगा तो यह मन्दिर वाले मर जाएंगे। रसूल आजाद! मैं न तेरे साथ और न किसी के साथ धोखा करना चाहता हूं, मन्दिर चले या न चले मैं इस बात की चिन्ता नहीं करता मैं सतवादी पुरुष हूं। क्या मंदिर को साथ ले जाऊंगा? सच्चाई यह है कि जो कुछ तुमको मिला या मिल रहा है। यह सब तेरे अपने ही कर्म का, तेरे अपने ही विश्वास और तेरी अपनी ही नियत का फल है। तेरी अपनी इच्छा है मन्दिर में एक लाख रुपए दे. तेरी इच्छा है दस लाख दे तेरी इच्छा है मत दो। मैंने तो सच्ची बात बता

दी और अपना कर्तव्य पूरा कर दिया। तुम आए हो मेरे पास शुभ भावना है वह मैं तुमको देता हूं, इसके सिवा मेरे पास और कुछ नहीं है। जो आदमी मेरी बात पर विश्वास कर लेते हैं उनके काम हो जाते हैं। क्योंकि मैं कुछ नहीं करता इसलिए चकित होता हूं। इससे सिद्ध हुआ कि सब तुम्हारा अपना ही विश्वास है। तुम स्वयं पूर्ण हो। जिस रूप में उस मालिक को मानते हो उसी रूप में तुम्हारी सहायता हो जाती है। वह मालिक हर समय तुम्हारे साथ है और तुम्हारे ही अंतर है। यह समझ ले जाओ मेरे पास से ताकि तुम्हारा जन्म बन जाए और तुम किसी के धोखे में न आओ। पैसे की तो मुझे भी आवश्यकता है। और मैं भी लेता हूं परन्तु किसी को अज्ञान में रख कर नहीं। धोके से किसी आदमी से पैसा लेना महापाप है। मैं धोखा नहीं करना चाहता। तुम्हारी इच्छा हो मेरे पास आओ। इच्छा हो न आओ। यदि यह समझते हो कि मेरी शिक्षा संसार के लिए लाभदायक है तो इस शिक्षा को फैलाने के लिए जो इच्छा हो मन्दिर की सहायता करो।

मैं कई बार सोचता हूं कि मेरी कही हुई बात कैसे पूरी हो जाती है। क्योंकि मेरे अन्तर और बाहिर एक है और जो कुछ मैं किसी को कहता हूं उसमें मेरा निजी स्वार्थ नहीं होता इसलिए जो बात होने वाली होतो है वह मेरे मुख से निकलती है। लोग कहते हैं बाबा जी ! आपने यह कर दिया और वह कर दिया। बाबा कौन है करने वाला ?

"साधु बोले सहज स्वभाव, साधु का बोला बृथा न जाय।"

मैं कुछ नहीं करता। सोचता हूं कि मैंने भी एक दिन चले जाना है क्यों हेरा फेरी करूं। मैंने इन महात्मों की जीवन दशा देखी और मैं डर गया इसलिए मैंने सच्चाई से जीवन व्यतीत किया है।

अजल में जानवे हस्ती तलाशे यार में आए

ऐ दाता। यहां आया, आपके चरणों में गया था, आपने शिक्षा को बदल जाने की आज्ञा दी थी, आपकी मौज ने खेल खिलाया, ठीक है या गलत है, यह आप जानो। मैंने जो कुछ किया है बिलकुल नेक नियती से किया है। सबको राधास्वामी

तलाश और उसका परिणाम

सत्संग हजूर परम सन्त परम दयाल पण्डित फकीर चन्द जी महाराज मानवता मन्दिर, होशियारपुर

दिनांक १६ दिसम्बर १९७४

राधास्वामी ! कल रविवार था और मासिक सत्संग था। सायंकाल मैंने अपना सत्संग टेप रिकार्ड पर सुना। मैंने सत्संग में कहा था कि हमारे अन्तर में कोई वस्तु है जो शारीरिक और मानसिक वोध भान करती है प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है वह और वस्तु है और जो कुछ वह देखती है सुनती है या भान करती है वह और वस्तु है। राधास्वामी मत की किताबों में या कबीर साहिब के शब्दों में उसको चौथा या पांचवां पद कहा गया है।

रात को मैं अकेला था तो अपने आप में सोचता था कि फकीर ! जो कुछ तुमने कल कहा क्या वह ठीक है ? जहां तक मेरा अनुभव है मैं इसको ठीक मानता हूं परन्तु उस अवस्था में मैं हर समय ठहर नहीं सकता। ठहरना क्या है ? यह विश्वास हो जाना कि में और हूं और यह विराटपुरुष (स्थूल प्रकृति) अव्याकृत (सूक्ष्म प्रकृति) और हिरण्य गर्भ (कारण प्रकृति) प्रकाश और शब्द यह और हैं। किन्तु मुझसे इस अवस्था में ठहरा नहीं जाता। मैं इस बात को जानता भी हूं, मुझे इस बात का अनुभव भी है परन्तु फिर भी किसी समय फंस जाता हूं। रात को सोचता रहा। मेरा अपना जीवन या दूसरे सन्तों का जीवन मेरे सामने आता रहा। अब मान लो कि मैं ठहर भी जाऊं। कभी २ ठहर भी जाता हूं। तो क्या वह वस्तु जिसको मैं कहता हूं कि असल में मैं हूं और वह स्थूल सूक्ष्म और कारण प्रकृति से अलग है क्या वह इस प्रकृति में कोई परिवर्तन ला सकती है ? मेरा निजी अनुभव, हजूर दाता दयाल जी महाराज का जीवन, हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज का जीवन, परम हंस

राम कृष्ण का जीवन या और सन्तों की परिस्थितियां मुझे विवश करती हैं कि मैं यह मानूं कि वह वस्तु परिवर्तन नहीं कर सकती। यह हो सकता है कि मैं किसी समय मानव अपनी विचार शक्ति से इस प्रकृति में कुछ परिवर्तन ला सकें परन्तु यह परिवर्तन अव्याकृत और हिरण्य गर्भ के नियम के अधीन होगी और स्थायी होगी।

अब मेरी कमर में दर्द है। वह वस्तु जो, अपने आप को सबसे जुदा समझती है जब वह शरीर में आती है तो दर्द को अनुभव करती है इसलिए मैं इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि वह जो वस्तु अपने आप को समझती है वह इसमें परिवर्तन नहीं कर सकती सम्भव इसीलिए सन्त, फकीर या कई सम्प्रदाय उस मालिक को यह मानते हैं कि वह कर्म नहीं करता अकर्ता है और कर्म से न्यारा है और सबका अधार है। जिस शक्ति ने यह संसार रचा है उसने मेरे मस्तिष्क की प्रकृति ही ऐसी बनाई है कि हर एक वस्तु की खोज करता हूं। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि तुमने सारा जीवन इस खोज में गुजारा तुमको क्या मिला ? न

अपने शरीर को न किसी दूसरे के शरीर के कष्ट को तुम दूर कर सकते और न ही किसी की प्रकृति को बदल सकते हो तो फिर मेरी इस तलाश का क्या परिणाम निकला ? इसका मुझे कोई उत्तर नहीं मिलता। इसलिए अब मैं कहां पहुंचा हूं। जो हो रहा है, हो रहा है। जो कुछ इस रचना में हो रहा है, वह हो रहा है। इस अवस्था में आ कर मेरी दौड़ धूप समाप्त हो गई।

अब जीवन कैसे व्यतीत करता हूं ? कि भई। जो कुछ हो रहा है इसको सहन कर और शरणागत हो जा—

दोड़त दौड़त दौड़या जहां तक मन की दौड़ ।
दौड़ थका मन थिरभ्या वस्तु ठौर की ठौर ।

ऐ भारत वासियों ! धार्मिक और पान्थिक संसार व लो !! मेरे सारे जीवन की खोज और दौड़ धूप का यह परिणाम निकला है। अभी तक बुद्धि के चक्कर में खाता रहता हूं। रात को भी विचार आया कि अच्छा भाई शरणागत ही सही लेकिन तुम आए कहां से हो तेरा शरीर कैसे बना

और शरीर छोड़ने के पश्चात कहां जाओगे ? पता नहीं मैंने जो समझा है गलत है या ठीक है। मैं तो इस परिणाम पर आया हूं कि हर एक जीवन चेतन का एक बुलबुला है। प्रकृति की मौज से बनता है और टूट जाता है। यह मेरी तलाश का फल है और मेरा आत्मा कहता है कि यह ठीक है। यह अनुभव और ज्ञान शास्त्रों के अनुसार अन्तिम अवस्था है। प्रकृति के खेल से हमारे अन्तर एक बुद्धि तत्व पैदा हो जाता है।

शास्त्र और सन्त उसको माया कहते हैं। जब वह प्रकृति समाप्त हो जाती है तो संसार वैसा का वैसा ही रहता है लेकिन हमारी "मैं" अपने मैं पने को खो कर समाप्त हो जाती है। वह जो वस्तु शरीर, मन, आत्मा और शब्द से मैंने जुदा बताई है, मैं इसका भी कोई अस्तित्व नहीं समझता। यह मेरी खोज है। क्यों ? ज्ञान हो गया कि जीवन क्या है ?

लब खुले और बन्द हुए यह राजे जिन्दगानी है।

फिर मैं सोचता हूं कि क्या किसी और सन्त ने भी ऐसा कहा है या यह तेरा अपना ही अनुभव है ?

हां ! कहा है। जब हम बसरे बगदाद में थे तो हजूर दयाल जी महाराज ने पण्डित पुरुषोतम दास जी को एक पत्र में लिखा था—

Silence in the beginning and silence in the end.

इबतदा (आरम्भ) में खामोशी और इन्तहा (अन्त) भी में खामोशी

कबीर साहिब ने जहां आद घर का वर्णन किया है वहां लिखते हैं—

साखिया वा घर सबसे न्यारा, जंह पूरन पुरुष हमारा ।
जंह नहिं सुख दुख साच झूठ नहिं, पाप न पुन्न पसारा ।
नहिं दिन रैन चन्द नहिं सूरज, बिना ज्योति उजियारा ॥
नहि तंह ज्ञान ध्यान नहिं जप तप, वेद कितेब न बानो ।
करनी धरनी रहनी गहनी, ये सब जहां हिरानी ॥
घर नहि अवर न बाहर भीतर, पिण्ड ब्रह्मंड कछु नाहीं ।
पांच तत्व गुन तीन नहिं तंह, साखी शब्द न ताहीं ॥
मूल न फूल बेलि नहिं बीजा, बिना वृच्छ फल सोहे ।
ओहम सोहं अर्ध उर्ध नाहिं, स्वासा लेख न कोहै ॥
नहिं निर्गुन नहिं सर्गुन भाई, नहिं सूच्छम अस्थूलं ।
नहिं अच्छर नहिं अविगत भाई, ये सब जग के मूलं ।
जहां पुरुष तहवां कछु नाहीं, कहै कबीर हम जाना ।
हमरी सैन लखै जो कोई, पावै पद निरवाना ॥

परन्तु मेरा जीवन अभी बाकी है और मेरे

अन्तर अभी तक शूं शूं होती रहती है। स्वामी जी महाराज ने भी कहा है---

सबका आद कहूं अब स्वामी, अकह अपार अगाध अनामी

मौज से उसमें गति हुई और शब्द प्रकट हुआ। शब्द से सुरत और सुरत से शब्द। फिर यह सब रचना बन गई। इसलिए जो मेरा अनुभव है कि यह सुरत भी अजर और अमर नहीं है यह ठीक है, सुरत शब्द से प्रकट होती है।

शब्द गुपत तब रहा अनाम, शब्द प्रकट तब धरया नाम

राधास्वामी मत की आरती में कहा गया है कि—

सुरत हुई अति मगनानी, पुरुष अनामी जाए समानी।

जो यह कहा जाता है कि मैं अजर हूं और अमर हूं। यह एक मन बुद्धि की उपज है। इसलिए मेरी खोज से मुझे शान्ति मिल गई। मेरी खोज का क्या परिणाम निकला? शान्ति। शरीर के त्याग के पश्चात मेरी "मैं" के साथ क्या होगा यह पता नहीं है परन्तु इच्छा अवश्य है कि शरीर के त्याग के बाद मौज यदि मौका दे तो संसार को बता सकूं कि मैं कहां गया।

लेना हो सो जलद ले अवसर जासी चाल,
अवसर के चूके नरा मारे काल कराल।
मारे काल कराल फंसावे यम की फांसी।
बिगड़े अपना काम हुए जग भीतर हंसी।
दया राखिए चित्त में, कीजे दुखी निहाल,
लेना हो सो जलद में अवसर जासी चाल।

बस अब यह करना है। जीवन के सारे भ्रम समाप्त हो गए परन्तु जीवन अभी बाकी है। यह समझ में आया है कि जब तक जीवन है यदि किसी की सेवा हो सकती है तो कर जाओ।

मैंने यह खोज क्यों की ? हर धर्म और पन्थ ने अपने अपने विचार प्रकट किए। एक का विचार दूसरे से मिलता नहीं। इस हृदय में जनून पैदा हुआ कि में स्वयं असलियत, सारभेद और सच्चाई को देखूं और साथ ही यह भी प्रण किया था कि अपना अनुभव संसार को बता जाऊंगा। मैं किसी बात का दावा नहीं करता। यह मेरा कर्म भोग है। जो समझ में आया वह संसार को बताता रहता हूं। यदि दूसरे महात्माओं को अपना अनुभव कहने का अधिकार है तो मुझे भी अधिकार है। दूसरों ने तो अपने अनुभव का दावा किया परन्तु मैं दावा नहीं करता।

सबको राधास्वामी

स्वर्गीय सन्त कृपाल सिंह जी महाराज की २ वीं सालग्रह दिनाँक ५, ६, ७ फरवरी १९७५ को मानव एकता के रूप में सावन आश्रम दिल्ली में मनाई जा रही है। इस अवसर पर हजूर परम दयाल पं. फकीर चन्द जी महाराज को वहां के मन्त्री महोदय डा. एम. एम. चोपड़ा की ओर से निमन्त्रण दिया गया है। उत्तर में जो पत्र हजूर परम दयाल जी महाराज ने लिखा है उसकी नकल लोक-कल्याण के लिए प्रकाशित की जा रही है, जो कि निम्नखिखित है।

मेरे प्यारे डा. एम. एम. चोपड़ा साहिब,

राधास्वामी

आपका दिनांक २८. १२. ७४ का लिखा हुआ पत्र मिला जिसमें हजूर संत कृपाल सिंह जी के ८२ वीं जन्मोत्सव मनाने के बारे में लिखा है।

मैं अपने अंतर गया और सन्त कृपाल सिंह जी की पुरानी याद और प्रेम सामने आया। कुछ वर्ष हुए देहरादून में मेरी उनके साथ ढाई घण्टे वार्तालाप हुई। उन्होंने अपने रूप की तलाश के

बाद मानव केन्द्र की स्थापना की और दूसरों को मानवता की राह पर चलने की प्रेरणा की, जिससे मानव जाति सुख और शान्ति से जीवन व्यतीत कर सकती है ।

मैंने तो आध्यात्मिकता की बड़ी खोज करने के बाद १५ अगस्त १९४७ को इन्सान बनो की आवाज दी । प्यारे भाईयो ! मैं सच्चे हृदय से चाहता हूं कि मानव जाति बार २ जन्म धारण करने के कारण की सच्ची समझ प्राप्त करे ।

भाईयो ! आध्यात्मिकता केवल शब्द और प्रकाश में रहना है । शेष सब मन की रचना है । जब तक मानव मन के मण्डल में है उसे ईर्ष्या, लोभ, और अनावश्यक कामनाओं से रहित होकर शुद्ध विचार रखने चाहिए । यदि हो सका तो मैं आऊंगा । मेरी आयु इस समय ८८ वर्ष की है । यदि न आ सका तो मेरी ओर से सालग्रह में भाग लेने वाले सज्जनों तक मेरा निम्नलिखित सन्देश पहुंचा देना ।

भाईयो ! हजूर सन्त कृपाल सिंह जी महाराज

को ८२ वीं सालग्रह के अवसर पर मैं आप सबका ध्यान उनकी शिक्षा की ओर दिलाना चाहता हूं—

१. वह प्रायः कहा करते थे कि शुद्धमती अर्थात् सच्ची समझ प्राप्त करो ।

२. गुरु एक शक्ति है जो हर इन्सान के अन्तर है ।

३. यदि एक व्यक्ति किसी पूर्ण गुरु के साथ अपना सम्पर्क पैदा कर ले तो वह साधन अभ्यास द्वारा अपने अन्तर भेद को जान सकता है । वह प्राय अपने शिष्यों को डायरी लिखने की आज्ञा देते थे ताकि वह उनके मन की दशा को समझ सकें ।

इसलिए मेरे विचार में कोई महापुरुष होना चाहिए जो प्रकति और मनोविज्ञान का ज्ञाता हो । लोंगों को अनुभव प्राप्त करने का सच्चा मार्ग बता सकता हो और शरीर, मन और आत्मा में समता लाने का ज्ञान दे सकता हो । मेरे विचार में आप के ट्रस्ट को किसी ऐसे महापुरुष के चुनाव का काम करना चाहिए लेकिन वह पुरुष ट्रस्ट के काम और सामाजिक बन्धनों से मुक्त हो ।

रुहानी सतसंग और मानव केन्द्र की सम्पत्ति

सार्वजनिक है। किसी एक व्यक्ति की नहीं है।

समाज के सदस्य के रूप में हर एक व्यक्ति को इस ट्रस्ट को सहायता करनी चाहिए जो गरीबों, विधवाओं, और अनाथों की सहायता करता हो या उसके काम से लोगों को लाभ पहुंचता हो।

मैं इस पत्र को अपनी पत्रिकाओं में प्रकाशित करवा रहा हूं।

आपका

फकीर

सूचना

माह फरवरी १९७५ का मासिक सत्संग मानवता मन्दिर होशियारपुर में १६, २. ७५ को होगा। हजूर परम दयाल जी महाराज क्योंकि दौरा पर होंगे इसलिए सत्संग हजूर पीरेमुर्शिद साहिब कराएंगे।

गूढ़ आध्यात्मिक विचार

याद रखिए। आपने पूर्ण गुरु से नाम लिया है, आप साधन और अभ्यास भी करते हैं, पोथियों का पाठ भी नित्य करते हैं लेकिन चित वृत्तियों पर काबू नहीं है, जीवन क्रियात्मक नहीं, कारोबार में ईमानदारी और सच्चाई नहीं तो आप कभी सुख शान्ति प्राप्त नहीं कर सकते।

मानव धर्म प्रकाश
द्वितीय भाग

मेरे पास लोग नाम दान लेने अभ्यास की विधि सीखने के लिए कई आते हैं। गुरु बन कर किसी को ऐसी शिक्षा देना अपने सिर पर बोझ लेना है। क्योंकि गुरु नाम तो समझ, विवेक, या ज्ञान का है, या आदमी के अन्तर प्रकाश गुरु के चरण हैं, व शब्द गुरु का देह है।

मेरे पास महात्मा दयाल दास जी रहते हैं। अभ्यासी, हैं और लुत्फ ये है कि वो ये समझते हैं कि मैं उनका गुरु हूं और उनके साधन में जो तरक्की हुई, वह मैंने की है। मैं कहता हूं कि मैंने कुछ नहीं किया। यह उसकी श्रद्धा विश्वास, पिछले कर्म या मालिक ने जो बख्शा है उसे मिला है। अगर कोई शख्श साधन की विधि या उन्नति चाहता हो, यहां मानवता मन्दिर में उनसे मिले और तरीका साधन वगैरा सीख सकता है।

मैं किसी बात की कोई गारन्टी नहीं देता, मेरे अनुभव में आया है, जो कुछ किसी को मिलता है, मिल चुका है या मिलेगा वो उसके पूर्व कर्म, नियत या श्रद्धा का फल है। वह भी उस मालिक की दया पर है। जिस पर दया आदि कर्ता की हो वो ये न्यामत पावै। फकीर

सूचना

अनुभव सार नामी पुस्तक जो कि श्री कुबेर नाथ श्री वास्तव ऐडवोकेट, रसड़ा ने लिखी है और मानवता मन्दिर की तरफ से प्रकाशित हुई है, बिना मूल्य सैक्रेटरी 'मानवता मन्दिर' से मिल सकती है। पुस्तक पढ़ने के बाद यदि कोई सज्जन चाहे, तो मानवता मन्दिर की अपनी इच्छानुसार दान के रूप में सहायता कर सकता है। यदि पुस्तक पसन्द न आए तो पढ़ने के बाद मन्दिर को लौटाई भी जा सकती है।

सैक्रेटरी,
मानवता मन्दिर,
होशियारपुर,

सूचना

मानव मन्दिर का मैंने कोई मूल्य नहीं रखा। क्यों? मुझे दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज ने चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदलने की आज्ञा दी थी। मैंने जो कुछ समझा और अनुभव किया वह किसी धर्म या पन्थ के धर्मग्रंथों से नहीं लिया। यह मेरा निज अनुभव है। क्योंकि निज अनुभव का नाम ही ज्ञान है, मैं अपने ज्ञान को बेचता नहीं। तुलसीदास जी ने रामायण में भरत की जबानी यह ख्याल जाहिर किया है कि ब्राह्मण के लिए वेद का बेचना महापाप है। वेद नाम है ज्ञान का। इस पत्रिका के पढ़ने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। मैं यह हाथ जोड़ कर पढ़ने वालों से प्रार्थना करूंगा कि अगर किसी को इसके पढ़ने में रुचि न हो और जीवन को नियम-बद्ध बनाने की जरूरत न हो या इन मेरे विचारों से किसी को सन्तुष्टि, उत्साह, खुशी और शान्ति न मिलती हो तो वह मानव मन्दिर को न मंगवाए और जो मंगवा रहे हैं अगर लिख दें तो हम न भेजें। अगर कोई यह समझता है कि मेरे इस काम से किसी को फायदा पहुंचता है तो वह मानवता मन्दिर की सहायता करे ताकि यह काम जारी रखा जाय।

पत्र व्यवहार में मानव मन्दिर का क्रमाँक नं० जरूर दिया करें।

फकीर

Regd. No. 26265/74.
MANAV MANDIR

P—Hsp—7.

ADDRESS

To

1283

Sri: A. Hanumanth Rao
H. No:- 10-3-194/8
Humayon Nagar
Hyderabad 28
(A.P)

From :

MANAVTA MANDIR,
SUTEHRI ROAD,
HOSHIARPUR.